विशेष क्षेत्रः बीज उत्पादन

	श्री हिम्मताराम
ग्राम	बेन्दों का बेरा
तहसील	लोहावट
जिला	जोधपुर
फोन	8890946827
आयु	45 वर्ष
शिक्षा	12वीं
जमीन	4.08 हैक्टेयर
खेती का अनुभव	15 वर्ष

सामाजिक मान्यता

ये अपने क्षेत्र के लोकप्रिय फसल एवं बीज उत्पादक है। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, की सहायता से अपने क्षेत्र में सर्वप्रथम चने की उन्नत किस्म GNG-1581 तथा मूंग की उन्नत किस्म GAM-5 का प्रसार किया।

तकनीकी विवरण

श्री हिम्मता राम जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी के वैज्ञानिकों के सभी निर्देशों का पालन करते हुए मूंग तथा चने की फसल में खेत की तैयारी तथा बुवाई से लेकर कटाई तक का कार्य किया। उन्होंने फसलों के उत्पादन के साथ–साथ अगले वर्ष के लिए स्थानीय किसानों को अपनी उपज में से चने तथा मूंग को बीज के रूप में भी उपलब्ध करवाया। फसल उत्पादन तथा बीजोत्पादन से सालाना 2 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हो जाती है।

तकनीकी की उपयोगिता

इनकी सफलता को देखते हुए क्षेत्र के अन्य स्थानीय कृषकों का रूझान भी बीज उत्पादन की तरफ हुआ है।

विशेष क्षेत्रः फसल उत्पादन

	श्री भंवर लाल
ग्राम	श्रीराम नगर (सिरमण्डी)
तहसील	ओसियां
जिला	जोधपुर
फोन	9660363295
आयु	41 वर्ष
शिक्षा	12वीं
जमीन	6.4 हैक्टेयर
खेती का अनुभव	10 वर्ष

सामाजिक मान्यता

ये अपने क्षेत्र के लोकप्रिय फसल उत्पादक है। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, की सहायता से अपने क्षेत्र में सर्वप्रथम जीरे की उन्नत किस्म GC-4 का प्रसार किया।

तकनीकी विवरण

जोधपुर जिले के श्री भंवरलाल ने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी के वैज्ञानिकों के सहयोग से जीरे की फसल के उत्पादन में ख्याति प्राप्त की है। फसल के उत्पादन के साथ–साथ इन्होंने स्थानीय किसानों को जीरे का बीज भी उपलब्ध करवाया है। फसल उत्पादन से सालाना 2.50 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हो जाती है।

तकनीकी की उपयोगिता

इनकी सफलता को देखते हुए क्षेत्र के अन्य स्थानीय कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, के साथ जुड़कर वैज्ञानिक विधि द्वारा फसल उत्पादन करने की तरफ रूझान बढ़ा है।

विशेष क्षेत्रः फसल उत्पादन

	श्री भीख सिंह
ग्राम	कालीमाली (आमला)
तहसील	लोहावट
जिला	जोधपुर
फोन	8209033117
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	10वीं
जमीन	33.31 हैक्टेयर
खेती का अनुभव	11 वर्ष

सामाजिक मान्यता

ये अपने क्षेत्र के लोकप्रिय फसल उत्पादक है। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, की सहायता से अपने क्षेत्र में सर्वप्रथम बाजरा की उन्नत किस्म MPMH-14 का प्रसार किया।

तकनीकी विवरण

जोधपुर जिले के श्री भीख सिंह ने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी के वैज्ञानिकों के सहयोग से बाजरे की फसल के उत्पादन में ख्याति प्राप्त की है। फसल उत्पादन से सालाना 1 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हो जाती है।

तकनीकी की उपयोगिता

इनकी सफलता को देखते हुए क्षेत्र के अन्य स्थानीय कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, के साथ जुड़कर वैज्ञानिक विधि द्वारा फसल उत्पादन करने की तरफ रूझान बढ़ा है।

विशेष क्षेत्रः फसल उत्पादन

	श्री रामूराम
ग्राम	पल्ली प्रथम
तहसील	लोहावट
जिला	जोधपुर
फोन	9413132702
आयु	37 वर्ष
शिक्षा	10वीं
जमीन	4 हैक्टेयर
खेती का अनुभव	10 वर्ष

सामाजिक मान्यता

ये अपने क्षेत्र के लोकप्रिय फसल उत्पादक है। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, की सहायता से अपने क्षेत्र में सर्वप्रथम चने की उन्नत किस्म GNG-1581 का प्रसार किया।

तकनीकी विवरण

जोधपुर जिले के श्री रामूराम ने कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी के वैज्ञानिकों के सहयोग से चने की फसल के उत्पादन में ख्याति प्राप्त की है। फसल उत्पादन से सालाना 1.25 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त हो जाती है।

तकनीकी की उपयोगिता

इनकी सफलता को देखते हुए क्षेत्र के अन्य स्थानीय कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, के साथ जुड़कर वैज्ञानिक विधि द्वारा फसल उत्पादन करने की तरफ रूझान बढ़ा है।

विशेष क्षेत्र– जैविक खेती

कृषि विज्ञान केन्द्र	कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, जोधपुर-II
शीर्षक	जैविक खेती
किसान का नाम व पता	रावलचन्द पंचारिया पुत्र श्री घेवरचन्द पंचारिया गांव– नौसर, तहसील–ओसियां, जोधपुर
	श्री रावलचन्द पचारिया, जोधपुर की ओसियां तहसील के पास नौसर गांव के रहने वाले है। जब वे नौंवी कक्षा में पढ़ते थे तो उनके पिताजी का देहांत हो गया और उन्हें पढ़ाई छोड़कर जोधपुर जाना पड़ा। उन्होंने जोधपुर में एक स्टेशनरी कि दुकान पर 1000 रुपये महीना में नौकरी शुरू की। सैलेरी कम थी तो वे हैदराबाद, चेन्नई और मुंबई तक भी गए परन्तु फिर भी उनका वेतन 3500 से ज्यादा नहीं हो पाया। खुद की दुकान गांव मे शुरू की। इस दुकान से इनकी आय बढ़ने लगी और और गांव में रहते हुए ही लगभग 5 से 7 हजार रुपए महीना कमाने लगे।
अपनी खुद की 30 बीघा जमीन पर वे खेती भी करने लगे, क्योंकि वे अपनी मातृभूमि को बेहद प्यार करते थे उससे दूर रहकर देख चुके थे। उन्होंने ने निर्णय लिया कि चाहे पैदावार हो या ना हो खेतों में रसायन की एक बूंद भी नहीं डालने देंगे। आज रावलचंद पंचारिया 110 बीघा खेतों पर उत्पादन कर रहे हैं। उनके खेत में जो उगता है जैविक उगता है, अमृत उगता है। जैविक खेती उनके घर में ऐसी संपन्नता लेकर आई कि मात्र नौंवी तक पढ़े हुए रावलचंद पंचारिया नए नए नवाचार करने लगे। वे राजस्थान के पहले काले गेंहू उगाने वाले किसान बन गए। सफेद शकरकंद उगाने लगे। चिया सीड उगा रहे है। जैविक खेती अपनाने के बाद उनकी वार्षिक आमदनी सभी खर्च काटकर 10 लाख रुपये हो गई है। उनके खेतों पर अन्य किसानों को बुलाकर प्रशिक्षण शिविर आयोजित होने लगे हैं। आसपास के खेत वाले अपनी जमीन उनको वार्षिक किराए पर देने लगे।	
कृषि विज्ञान केन्द्र, फलोदी, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर व काजरी, जोधपुर के अधिकारियों के निर्देशानुसार काम करते हुए रावलचंद पंचारिया अब आसपास के क्षेत्र में एक रॉल मॉडल किसान बन गए है। लोग जगह जगह से उन खेतों को घूमने आने लगते हैं। उनके खेत प्रशिक्षण केन्द्र बन जाते है, प्रयोगशाला बन जाते हैं। आप मिशन जैविक राजस्थान की सबसे मजबूत कड़ी हैं।	